आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

छायाचित्र : मुखपृष्ठ नेट से अन्य प्राचार्य सदाविजय आर्य

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	बाल दिवस की सार्थकता	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे...	९
आंतर भारती - २	बसववचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
आत्म कथन- धुनी तरुणाई :	आसपास के मनुष्य	१२
विशेष आलेख - १	कहानी रह जाएगी भगत पूर्ण सिंह की	१७
चिंतन भारती - १	नये युग की नई पुकार ?	२०
काव्य भारती -	रक्त-पुष्प पर मंडराते	२२
समाचार भारती - १	हिन्दी पखवाडा समारोह समिति केरल हिन्दी प्रचार सभा	२३
विशेष आलेख - १	वन्यजीवन और सामाजिक संघर्षों का अंतर्संबंध	२४
विशेष आलेख - २	पंजाब को लीलती नशाखोरी	२७
विशेष आलेख - ३	मातृत्व : एक रुका हुआ फैसला	३०

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com

लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

बाल दिवस की सार्थकता

जवाहरलाल नेहरू की जयंती को हम हर वर्ष देश में हर्षोल्लास के साथ बाल दिवस' के रूप में तो मना रहे हैं मगर देश के समूचे बच्चों को इस खुशी की तकदीर नहीं हो पा रही है और इस दिशा में गंभीरता से सोचने के लिए हम विवश नहीं हो पा रहे हैं, यह बड़ी विडंबना है.

भारतीय संविधान बच्चों के मूलअधिकारों के संरक्षण की गारंटी देता है और तदनुसार बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए कई कानून बनाए गए हैं और कई कानूनों के तहत ऐसे प्रावधान भी किए गए हैं कि बाल श्रम पर रोक लगाया जाए और जोखिम भरे उद्योग-धंधों में बच्चों को काम पर न लगाया जाए. बच्चों के कल्याण को सुनिश्चित करने के प्रयास के रूप में समन्वित बाल विकास योजना जैसी योजनाएं भी अपनी जगह हैं. भारतीय संसद द्वारा बाल अधिकार संरक्षण आयोग अधिनियम, २००५ बनाया गया था, जिसके तहत बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए एक आयोग का गठन किया गया है. इस बीच शिक्षा अधिकार कानून' बनाकर भी सभी बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित कर पाने में सफलता हासिल नहीं हो पाई है, इसमें अधिकारी वर्ग की मानसिक दुर्बलता खुलकर सामने आ जाती है. यह बड़ी विडंबना है कि इस कानून को लागू करने से होने वाले आर्थिक नुकसान की भरपाई करने के लिए यहाँ तक कि सरकारी प्रबंधन के स्कूलों में शुल्क की बढ़ोत्तरी की गई है जो अन्य बच्चों के लिए समस्या बन रही है. इस कानून के बहाने स्कूलों में उन बच्चों को शामिल करने की जिम्मेदारी कौन लें जो अनाथ हैं ? जिनके नाथ भी हैं, उन्हीं को ऐसे स्कूलों में अपने बच्चों की दाखिले के लिए लगातार शीर्षासन लगाकर घूमना पड़ता है, तो अनाथ बच्चों की सुध कौन लेंगे ?

२०१३ में घोषित भारत की राष्ट्रीय बाल नीति' यह मानती है कि बच्चे राष्ट्र की सबसे बड़ी परिसंपत्ति हैं. मगर उस परिसंपत्ति के परिरक्षण के लिए किए जा रहे कदम अधूरे ही साबित हो रहे हैं. पुराने पत्थरों, दीवारों, भवनों तक की सुरक्षा के लिए जिस रीति से सुरक्षा के उपाय हैं, मुझे लगता है कि बच्चों की सुरक्षा के लिए उनकी तुलना में कम ही उपाय हैं. हमारी नीतियों, रीतियों में निष्ठा की कमी है. 'राष्ट्रीय बाल नीति' यह भी मानती है कि सभी बच्चों का विकास आनंदपूर्ण व प्रेमपूर्ण पारिवारिक माहौल में हो और प्रत्येक बच्चे के लिए जीवन, अस्तित्व, विकास, शिक्षा, संरक्षण और समान भागीदारी के अधिकारों

के साथ-साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास हो जिसमें उनका मानसिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास भी शामिल है. बच्चों का स्वस्थ शारीरिक विकास भी हो और वे कुपोषण के शिकार न हो, यह भी ध्यान देना जरूरी है. इस दिशा में स्कूलों में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था तो अपनी जगह है, मगर इससे वंचित कई बच्चे हैं ; कई बच्चे आज भी बाल श्रमिकों के रूप में खतरे से भरे माहौल में कार्यरत हैं और कई बच्चों को न समय पर भोजन, न ही सामाजिक सुरक्षा मिल पा रही है. इसमें सरकारी क़ानून कई संदर्भों में कागजी करतूत ही लगने लगते हैं. यह विडंबना इसीलिए जारी है कि जिम्मेदार अधिकारी वर्ग कागजी कार्रवाई तक ही निष्ठावान नज़र आते हैं. बच्चों की सुरक्षा और उनके बचपन की सुरक्षा देश की सुरक्षा व देश के स्वस्थ विकास का संकेतक भी हो सकता है. मगर इस दिशा में भारत का सूचकांक संतोषजनक स्थिति में नहीं है.

विगत दिनों में नोबल शांति पुरस्कार की घोषणा होने पर यह जानकर कि पाकिस्तान की बालिका सुश्री मलाला के साथ भारत में बचपन बचाओ आंदोलन' के सारथी कैलाश सत्यार्थी भी इसके विजेता हैं, लोगों का ध्यानाकर्षण फिर से बाल अधिकारों की ओर हुआ. बाल मजदूरी पर पूर्ण रूप से रोक लगाने की दिशा में एक और कानून संसद में पेश होने के कगार पर होने के संबंध में भी अखबारों के पन्नों में इन दिनों नज़र आ रहा है. राष्ट्रीय बाल नीति धर्म, जाति, लिंग, वर्ग, भाषा, विकलांगता, सामाजिक, आर्थिक व अन्य किसी भी स्थिति के आधार पर बच्चों से भेदभाव न हो, इस बात का प्रतिपादन तो करता है, मगर इस दिशा में कानूनीतौर पर जो भी व्यवस्था है, वह अधूरी साबित हो रही है. क्योंकि उसके कार्यान्वयन की व्यवस्था तो सचमुच अधूरी है. कैलाश सत्यार्थी ने सदियों से खतरा मोल लेकर भी बच्चों को कारखानों में श्रम करने से मुक्त करवाने के संबंध में भी अखबारों के पन्ने गवाही देते नज़र आते हैं. वास्तव में बच्चों के संबंध में हमारे पास जितने भी कानून हैं, उन सबके कार्यान्वयन की जिम्मेदारी उन कानूनों के दायरों में आनेवाले समूची व्यवस्था पर है. मगर दुर्भाग्य से ऐसी व्यवस्था से जुड़े तमाम ठेकेदार हितभागी इस चेतना से मुक्त नज़र आते हैं कि बच्चों को बचाना देश को बचाने के समान है. तमाम तरह की विडंबनाओं से उनकी सुरक्षा के सुनिश्चित करने के साथ-साथ बच्चों का स्वस्थ विकास की ओर ध्यान देने की जरूरत है. इसमें अन्य तत्वों के साथ-साथ बच्चों का सुसंस्कार भी एक अनिवार्य तत्व है.

बच्चों को सुसंस्कारों की शिक्षा परिवार व समाज से मिलना चाहिए. बच्चों के बचपन का अधिकांश समय घर के अलावा पाठशाला में भी बीत जाता है. ये दोनों जगह बच्चों को बड़ी सावधानी से उनके विकास की पूर्ण निष्ठा के साथ प्रतिबद्ध पेश आएं, तब भी उन्हीं बच्चों का फायदा है जिन्हें घर-परिवार और पाठशाला का नसीब हो पाया है, बाकी बच्चों की भी बड़ी संख्या है, जिनके प्रति हमारी उपेक्षा जारी है. ऐसे उपेक्षित बच्चों के स्वस्थ विकास में कई बाधाएँ हैं, इस ओर पूरी निष्ठा के साथ कोई ऐसा प्रयास नहीं हो पा रहा है कि एक निश्चित समयावधि के भीतर भारत में ऐसी विडंबनाओं से ग्रस्त बच्चों के सुरक्षित विकास के लिए कोई कारगर कदम उठाया जा रहा हो. 'बाल दिवस' को यदि सार्थक बनाना हो तो उस एक दिन में भी सही, भारत के कोने-कोने में उनकी पहचान सभी स्कूली बच्चों, अध्यापक व अधिकारीवर्ग के माध्यम से करें, इसमें सामान्य जनता भी जिम्मेदारपूर्ण भूमिका निभाए. उनकी पहचान के बाद उनके कल्याण के लिए तमाम योजनाएं लागू हों, तभी ऐसे 'बाल दिवस' हर साल मनाने की सार्थकता हो सकती है. उपेक्षित बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी सचमुच बच्चे ही ले सकते हैं, सूचना एवं संचार व्यवस्था के विकास में बच्चों की बुद्धिकुशलता जिस रूप में भी रूपायित हुई है, उसका सही मायने में फायदा उन्हीं बच्चों को जिम्मेदारियाँ सौंपकर की जा सकती हैं. वास्तव में मेरे विचार में बाल अधिकारों की सुरक्षा से संबंधित आयोग की सदस्यता में भी बच्चों की भागीदारी हो, ये प्रयास सब तभी सार्थक बन पड़ेंगे. जब बच्चों में निष्ठाभर कर उन्हें राष्ट्र के लिए लायक नागरिक बनाना आसाना होगा, बच्चे निरे ईमानदार तो होते हैं, परिवेश ही उन्हें बे-ईमान बना रहा है. उन्हें ऐसे कुसंस्कारों से बचाना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है, ऐसी जिम्मेदारी उन उपेक्षित बच्चों के संबंध में स्वयं बच्चे भी ले सकते हैं.

बाल संस्कारों के महत्व को पूज्य साने गुरुजी की संकल्पनाओं के अनुरूप महत्व देते हुए समाज के प्रति अपनी भूमिका सुनिश्चत करने के उद्देश्य से आंतर भारती' अपनी ओर से विगत पांच-छः दशकों से लगातार समय-समय पर देश के विभिन्न भागों में बाल-संस्कार शिविरों का आयोजन करती आ रही है. ऐसे शिविरों में बच्चों को सुसंस्कारों का प्रशिक्षण मिल जाता है, जिससे कि वे आगे के जीवन में स्वस्थ व आदर्श नागरिक के रूप में विकसित हो जाएं. इन बाल-संस्कार शिविरों में उन तमाम उपेक्षित बच्चों को भी शामिल करने की जरूरत है जो परिवार व शिक्षा से वंचित हैं. 'आंतर भारती' के बाल-संस्कार

शिविरों के आयोजन के संदर्भ में आंतर भारती' के कार्यकर्ताओं को इस ओर ध्यान देने की बड़ी जरूरत है. अनाथ बनने के लिए मजबूर बच्चों को बच्चों के शिविर ही आश्रय की बेहतरीन जगह हैं जहाँ बच्चे ही उन उपेक्षित बच्चों को निष्कपट प्यार व स्नेह बांट सकते हैं. आंतर भारती अपने सीमित साधनों के बावजूद हर वर्ष दो-चार बड़े पैमाने पर ऐसे शिविर आयोजित करने की कोशिश करती रहती है और कर्मठ कार्यकर्ता स्थानीय स्तर पर ऐसे कई छोटे शिविरों का आयोजन भी करते रहते हैं. सरकारी स्तर पर ऐसे संस्कार शिवरों की एक स्थाई व्यवस्था भी हो तो निश्चय ही उपेक्षित बच्चों की सुरक्षा और संस्कारपूर्ण माहौल में उनका पलना संभव हो पाएगा. बाल अपराध गृहों, छात्रावासों आदि से ऐसी अपेक्षा पूरी नहीं हो पा रही है. जिम्मेदार अधिकारी वर्ग अपनी जिम्मेदारी निभाने के सबूत कुछ-कुछ आंकडों में दिखवाते रहें तो सदियों तक हमारे पास ऐसी ही विडंबनात्मक स्थिति पनपती रहेगी. सरकार को चाहिए कि वह नेहरू जयंती के दिन 'बाल दिवस' की कोरी रस्म अदायगी की जगह कारगर कदम उठाए कि एक निश्चित समयावधि में भारत गर्व से कह पाए कि अनाथ और शोषित बच्चों की संख्या भारत में शून्य है. भारत की जनगणना २०११ के अनुसार भी आगामी दशकों में भारत में ही दुनिया के सबसे अधिक संख्या में बच्चे व युवा वर्ग होंगे. ऐसे में हमारी जिम्मेदारी और चुनौती और बढ़ जाती है. आशा है, 'बाल दिवस' की सार्थकता की दिशा में सब जिम्मेदारी के साथ सोचकर अपने स्तर पर कारगर कदम उठाने की कोशिश करेंगे. कैलाश सत्यार्थी को नोबल पुरस्कार की घोषणा को लेकर कुछ लोगों की ऐसी भी धारणा है कि भारत में बाल अधिकारों की उपेक्षा को दर्शाने की यह पश्चिम की एक साजिश जैसी भी है. पश्चिम की साजिशें हो न हो, मगर सचमुच भारत को विश्व गुरु' साबित होना हो तो यह हमारी सबसे बड़ी प्राथमिक जिम्मेदारी बन जाती है कि हम अपने देश के समूचे बच्चों का सुरक्षापूर्ण विकास सुनिश्चित करें और उन्हें सार्थक शिक्षा दें ताकि वे जिम्मेदारपूर्ण नागरिक के रूप में विकसित हो सकें.

'बाल दिवस' व 'शिक्षा दिवस' को सार्थक रूप से मनाने के लिए प्रतिबद्ध होने के लिए सबको संकल्पबद्ध होने का आग्रह करते हुए करबद्ध प्रणाम सहित. श्री कैलाश सत्यार्थी का भी अभिनंदन !

मुहर्रम व गुरुनानक जयंती की हार्दिक शुभकामनाओं सहित..

- डॉ. सी. जय शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

नाहीं देवापाशीं मोक्षाचें गांठोळें

नाहीं देवापाशीं मोक्षाचें गांठोळें । आणूनि निराळें द्यावे हातीं ।।ध्रु।।
इंद्रियांचा जय साधुनिया मन । निर्विषय कारण असे तेथे ।।१।।
उपास पारणीं अक्षरांची आटी । सत्कर्म शेवटीं असे फळ ।।२।।
आदरें संकल्प चारं अतिशय । सहज तें काय दुःख जाण ।।३।।
स्वप्नींच्या घायें विवळासी वांयां । रडे रडतियासवें मिथ्या ।।४।।
तुका म्हणे फळ आहे मूळापाशीं । शरण देवासीं जाय वेगीं ।।५।।

<u>English Translation</u>

God does not have packages of Moksha
Naahin devaapaashin mokshaachen gaathode

God does not have packages of Moksha, Realisation,
That may be doled out to people for the asking.

Conquer the mind and make the mind like a clean slate.
Fasting and parrot-like iterations do not give desired results.
Good deeds alone will give good results.
Join the waari, the pilgrimage procession, to Pandharpur
And Get rid of all suffering.

Crying over pain caused during a dream is only an illusion.
Says TUKA, surrender before the Lord, with all humility
And His grace will surely follow.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

आंतर भारती - २

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

माडिदेनेंबुदु मनदल्लि होळेदरे
ऐडिसि काडितु शिवन डंगुर
माडिदे नेन्नदिरा लिंगक्के
माडिदेनेन्नदिरा जंगमक्के
माडिदेनेंबुदु मनदलिल्लदिद्दरे
बेडिद्द नीव कूडलसंगमदेव

हिन्दी काव्यानुवाद :

मैंने किया यह भाव मन में आया तो ।
शिवलोक में डौंडी पिटेगी ।
किया है मैंने मन में आया तो लिंग के लिए ।
किया हैं मैंने मन में आया तो जंगम के लिए ।
किया है भाव मन में न आया तो ,
मन चाह पूरी करते हैं कूडल संगम देव

भाष्य : दानी के मन में 'मैं दान करता हूँ' का भाव नहीं होना चाहिए । मैंने दान किया यह भाव मन में भी आया तो शिव ऐसे दानी को पसंद नहीं करेंगे. वह अहंकार उसे छलता रहेगा. अहंकार रहित हो के लिंग जंगम के लिए दिया है यह भाव दानी के मन में हो. मैंने दान किया यह भाव मन में न रहा तो कूडल संगम देव बिन मांगे मनोवांछना पूरी करते हैं इस प्रकार का विश्वास महात्मा बसवेश्वर इस वचन में व्यक्त करते हैं.

तात्पर्य : दानी वही जो 'मैं' से रहित होता है. ऐसे देता है जैसे मेघ पानी, पेड छाँव, फूल गंध देते हैं.

-'विद्या' १२, ब्रह्मचैतन्य नगर
विजापूर रोड, सोलापूर - ४१३००४ (महा.)

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)

इल्लऱविमल् (गृहस्थ-धर्म)

अध्याय - ७. मक्कट् पेरु (संतान प्राप्ति)

मक्कळ्मेय् तीण्डल् उड़र्किन्बम् मट्रुअवर्
चार्केट्टल् इन्बम् शेविक्कु । (कुरल - ६५)

बच्चों का स्पर्श
तन का हर्ष; बोली
कर्ण-मधुर ।

भावार्थ - छोटे बच्चों के कोमल स्पर्श से शरीर पुलकित हो जाता है और उनकी तुतली बोली कानों को मथुर लगती है ।

कुऴल्निदु याऴ्इनिदु एन्बतम् मक्कळ्
मऴलैच् चोल् केळादवर् । (कुरल - ६६)

तुतली बोली
न सुनी; कहें बंशी -
तंत्री मधुर ।

भावार्थ - मुरली का स्वर और तंत्री नाद को वे ही लोग मधुर कहेंगे जिन्होंने अपने बच्चों की तुतली बोली कभी न सुनी हो ।

आत्म कथन : धुनी तरुणाई

आसपास के मनुष्य

- शेषराव मोहिते

छात्र-युवा संघर्ष वाहिनी से मेरा परिचय हुआ तब जयप्रकाश नारायण जीवित नहीं थे. मई-जून १९८० में औरंगाबाद के देवगिरी महाविद्यालय में महाराष्ट्र स्तर पर आयोजित किए गए युवक-युवती शिविर में मैं सहभागी हुआ. वहीं वाहिनी से मेरा परिचय हुआ. लेकिन उससे पहले ही मेरी मानसिकता यह बन चुकी थी कि परिवर्तन लाने के इच्छुक किसी एक आंदोलन में शामिल हुआ जाए. मेरा जन्म कृषक परिवार में हुआ इस कारण और विद्यापीठ में उपाधि तक शिक्षा ग्रहण करते समय आजुबाजु जो कुछ हो रहा था उसे देखकर मन बेचैनी से भर जाता था. यह मानसिकता उस समय के लगभग सभी विचारी और संवेदनशील युवा-युवतियों की बन गयी थी. इस अवस्था के कारण ही मैं १९७८ में लातूर में आयोजित की गयी. विषमता निर्मूलन परिषद में गया था. लातूर में ही युक्रांद की हुई एक बैठक में तथा एक समारोह में उपस्थित था. सोमनाथ में प्रतिवर्ष मई माह में बाबा आमटे जी द्वारा आयोजित किए जानेवाले श्रमसंस्कार शिविर में दो बार शामिल हुआ था. 'साधना' साप्ताहिक उस समय जेब के लिए भारी था फिर भी उसके सदस्यता शुल्क का भुगतान करके उसे नियमित रूप से पढ़ता था. 'माणूस' साप्ताहिक का अंक भी परभणी रेल्वे स्टेशन से प्रति सप्ताह लाता था. कई बार विद्यापीठ में मारपीट के निमित्त के कारण जिले के विवाद के कारण या फिर औरंगाबाद विद्यापीठ के नामांतर के निमित्त हुए दंगे जैसे कारणों से जब-जब विद्यापीठ - महाविद्यालय बंद होते थे तब दूसरे छात्र अपने गांव चले जाते थे. लेकिन मैं वहीं होस्टेल में ही रहता था और भूखे जैसा किताबें पढता था. उस पढने के माध्यम से भी आजुबाजु की आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों में विद्यमान विषमता, राजनीति में व्याप्त क्षुद्रता इनके प्रति मन में चीढ उत्पन्न होती थी.

एक तरफ महाराष्ट्र के समाज-सुधारक डॉ.कुमार सप्तर्षि, डॉ.अनिल अवचट, डॉ.बाबा आढाव जिन राहों पर निकले थे वे राहें आकर्षित कर रही थीं. दूसरी

ओर आमटे जी का आनंदवन इशारा कर रहा था. लेकिन उस समय मुझे सबसे अधिक आकर्षण जेपी के प्रति था.मैं आठवीं-नववीं कक्षा में था उस दरम्यान महाराष्ट्र में अकाल ने त्राहि-त्राहि मचायी थी. पूरा गांव पहुँचता था शेरव फरदा की बंजर जमीन पर पत्थर फोडने. लेकिन मेरा स्कूल शुरु था. मेरे घर में मेरे चाचा शिक्षक थे इस कारण और अभी-अभी खोदे कुएँ में काफी पानी लगने के कारण माँ-पिताजी पत्थर तोडने नहीं जाते थे. गांव में जिनपर कभी, कहीं भी रोजाना काम पर जाने का प्रसंग नहीं आया था ऐसे परिवार के आदमी-औरतें -बच्चे सभी उस केन्द्र पर पत्थर तोडने जाते हुए देखकर मैं हैरान था. जिन खेतिहरों को मैं गांव के बडे कृषक कारभारी समझता था, जिनका गांव में अच्छा मान-सन्मान था, उनके घर की औरतें-बच्चे-आदमी जब पत्थर तोडने जाने लगे तब पता चला कि उनके बडे होने की झांकी आर्थिक मोर्चे पर कितनी कमजोर थी. इसे देखकर मेरे मन में बडी उथल-पुथल मची. सगवारे में काफी खेती है, गांव में बाडा है, नहरी में आजतक गन्ना था फिर भी साल दो साल जीवनयापन करने लायक पैसा किसी के पास नहीं यह मेरे लिए बाडा धक्का था. उससे एक ही वर्ष पहले, १९७१ में लोकसभा के चुनाव के समय इंदिरा गांधी ने घोषणा की थी कि, एक लडाई जीती है, अब दूसरी लडाई गरीबी की कांग्रेस ही जीतेगी. वह चुनाव कांग्रेस ने जीता भी लेकिन उस घोषणा की निरर्थकता विदारक ढंग से सामने आयी उसे भी देखा. १९७४ में देश में अलग-अलग स्थानों पर खडे हुए छात्रों के आंदोलन, मराठवाडा तक आकर पहुँचा उनका संसर्ग और उसमें से हमतक किसी आंधी की तरह आकर पहुँचने वाला 'जयप्रकाश नारायण' यह नाम. केवल वही एक आशा की किरण उस समय दिख रही थी. लेकिन उस समय था मेरा दसवी का वर्ष. देहात का स्कूल. मैं कुछ भी करने में असमर्थ था. दसवीं में प्रथम श्रेणी प्राप्त करना केवल इतना ही मेरा लक्ष्य था. बाद में पी.यु.सी. के लिए कॉलेज में जाने पर जे.पी., चंद्रशेखर, मोहन धारिया इनके नामों की चर्चा लगातार सुनाई देती थी. अखबारों में आनेवाले लेख, संपादकीय, समाचार लगातार पूरे माहौल को आंदोलित कर रहे थे. लेकिन उस समय भी कॉलेज के जिन-तीन विषयों की ट्यूशन, और सिनेमा इनके बीच उपरोक्त बातों की तरफ देखने के लिए भी फुर्सत नहीं थी. उसीमें पी.यु.सी.का वर्ष समाप्त हुआ. मेरा कृषि विद्यापीठ के

अंतर्गत पढाई के लिए परभणी पहुँचना और आपात्काल लागू होना लगभग साथ-साथ हुआ. आपातकाल में था एकदम सन्नाटा. उसे जब उठा लिया गया तभी हमें उसकी दाहकता का पता चला. फिर बडी तीव्रता से लगने लगा कि जो इस दूसरी आज़ादी की लड़ाई में शामिल हुए उनके साथ मैं भी रहूं. ऐन उम्मीद भरा पूरा जीवन सामने होते हुए भी उससे मुंह फेर लेने का साहस जिन्होंने किया, महाविद्यालय की पढाई, नौकरी, करियर इनका त्याग कर अठारह महिनों का कारावास भोगा वे ही उस समय हमारे लिए 'हिरो' बने. वाहिनी के औरंगाबाद शिविर में जाने के पीछे मेरा यह भी एक उद्देश्य था कि उन सभी लोगों से वहां मुलाकात होगी. उस शिविर का आयोजन अमर हबीब और सुधाकर जाधव ने किया था. आमटे जी के सोमनाथ शिविर में रजिया पटेल मिली थी. उसने इस शिविर में आने के लिए आग्रह से कहा था. कृषि विद्यापीठ से हम तीन लोग वहां गये थे. सुयश डाके, दिलीप मोरे और मैं. सुयश डाके और दिलीप मोरे इनका वाहिनी के साथ पहले से ही संबंध था. लेकिन मैं वहां एकदम अपरिचित था.

कृषि की पढाई, गांव में खेती, उस खेती का वास्तव, आजुबाजु का माहौल उपन्यास, नाटक, सिनेमा इनके माध्यम से खेती, खेतिहर, गांव इनके विषय में पढ़ा था, देखा था, उस विषय में मन में एकदम उबाल था. 'अंकुर', 'आक्रोश', 'सामना' जैसे कलात्मक चित्रपट लातूर के विषमता निर्मूलन शिविर में देखे थे. लोककथा ७८ यह नाटक उससे पहले का था. सारे तमाशापटों ने मन पर बार-बार यही कुरेदा था कि तूं गुनहगारों के पक्ष में है. अपना पिता कृषक है, लेकिन वह शोषक है. ऐसी स्थिति में सर्वप्रथम उसीके विरोध में संघर्ष करना चाहिए. लेकिन दूसरी बाजू में बहत्तर के अकाल ने दिखाया विदारक वास्तव कुछ और कह रहा था. यह सारा चित्रण कितना भी वास्तव हो लेकिन एकतर्फी है. सत्य क्या है ? असत्य क्या है ? मुझे निश्चित किसके विरोध में संघर्ष करना है? जीवन में पहली ही बार अत्यंत करीबी किसी के पास मन की खद्खद् व्यक्त की जाए इस तरह उस शिविर में मैं मेरी भावनाएँ व्यक्त कर रहा. वहां पहुँचे सभी लडके लडकियाँ इसी ढंग से अपनी भावनाएँ व्यक्त कर रहे थे. हमारे सामने आकर कोई भाषण नहीं दे रहा था.

या किसी खास दर्शन को सुनाकर हमें अभिभूत नहीं कर रहा था. न कोई हमपर अपने मत लादकर हमें निरुत्तर कर रहा था. न कोई हमें भोंपू जैसा बोलने के लिए पागल ठहरा रहा था. स्कूल-कॉलेज से यह एकदम ही अलग पद्धति थी. उस कक्षा में हमारे शिक्षक थे अमर हबीब, सुधाकर जाधव और शुभाशमीम. वास्तव में वहां न कोई शिक्षक था न विद्यार्थी. थे केवल प्रामाणिकता की जिजिविषा रखनेवाले सारे युवक और युवतियाँ. हमारे मन में जो भाव उभर रहे थे उनके लिए, चाहे जो कीमत चुकाने के लिए एक दूसरे को बल प्रदान करने ही मानो हम वहां एकत्र हुए थे. इन भावों में भी मन में उठनेवाली, भारत को उज्ज्वल, उदात्त, उन्नत ऐसा आकार देने की पागल महत्वाकांक्षा, अपने आप को दुनिया से काटकर एक स्वप्निल समाज व्यवस्था साकार करने की तमन्ना.

जे.पी.ने संपूर्ण क्रांति की ब्ल्यू प्रिन्ट नहीं दी थी. लेकिन जहां-जहां अन्याय है, वहां उसके विरोध में संघर्ष करने की, उसके विरोध में खड़े होने की एक राह तो निश्चित दिखाई थी. उस रास्ते पर चलने की शक्ति उस शिविर ने मुझे दी. इतनाही नहीं तो यह अहसास भी दिलाया कि तू अकेला नहीं, तो तेरे जैसे ही असंख्य व्यक्ति इसी पद्धति से, ऐसा ही सोचते हुए. तुझसे कई गुना अधिक अनुपात में सर्वस्व त्यागने तैयार, बुद्धिमान, कर्तबगार आदमी इस राह पर चल रहे हैं. इस अनुभूति ने मेरा अपना बौनापन भी मेरे सामने आया.

जो मैं पहले था वह उस शिविर में पूरी तरह बदल गया. उस शिविर की समाप्ति के बाद परभणी पहुँचने पर हमने विद्यापीठ में वाहिनी की शाखा शुरु की. अमरावती जाकर किशोर देशपांडे जी को बुला लाएं और उनका भाषण रखा. अब क्या करूं और क्या न करुं, इतना उत्साह. फिर विहामांडबा नामक स्थान पर वाहिनी के सभी सदस्यों की दो-तीन दिन की एक बैठक हुई. मतदान के आधार पर बहुमत से मेरा महाराष्ट्र के लिए संयोजक के तौर पर चुनाव हुआ. तब तक इधर शरद जोशी ने शुरू किया था शेतकरी आंदोलन. उसे कृषकों से उत्स्फूर्त प्रतिसाद भी मिल रहा था. इससे हम सभी बडे अचंभित थे. औरंगाबाद के शिविर में ही उस आंदोलन के प्रति उड़ती-उड़ती चर्चा हो चुकी थी. लेकिन उस चर्चा में आम तौर पर यह मत था कि यह आंदोलन प्याज और गन्ना

उगानेवाले सिंचित भूमि के मालिकों का है. हम तो दलित, आदिवासी, कृषि-श्रमिक, महिलाएँ अर्थात जो वास्तव में वंचित हैं उनके बाजू में हैं. ऐसी स्थिति में इस आंदोलन से हमारा क्या लेना-देना हो सकता है? लेकिन बाद में, नवम्बर में, उस आंदोलन ने उग्र रूप धारण किया. शरद जोशी कौन हैं ? कहां के हैं? पहले वे क्या करते थे? ये सारी बातें ज्ञात होने लगीं. उनकी भूमिका भी स्पष्ट होने लगी. उस समय चन्द्रकान्त और माया वानखेडे कृषि श्रमिकों में काम करने के उद्देश्य से मेटिखेडा में झोपडी डालकर रह रहे थे. वहां दो दिन की बैठक रखी. श्रीराम जाधव के साथ मैं उस बैठक में शामिल होने गया था. दो दिन की चर्चा के उपरान्त सभी इस निर्णय पर पहुँचे कि सुधाकर जाधव, अमर हबीब, किशोर देशपांडे ये लोग जाकर सटाना की सभा के दरम्यान श्री जोशी से मुलाकात करें. उनसे चर्चा करें. बाद में देखा जाएगा. वे गए और विदर्भ, मराठवाडा के जोशी जी के दौरे की तारीखें ही ले आए. शेतकरी आंदोलन का नेतृत्व करनेवाले शरद जोशी कोई पीढियों से काश्तकारी करनेवाले कृषक नहीं थे. साथ-साथ नेतागिरी करनेवाले नेता भी नहीं थे. एक समय संख्याशास्त्र के प्राध्यापक रहे बाद में आए.ए.एस.बनकर दस वर्षों तक सरकारी नौकरी की. बाद में विदेश में दस वर्ष नौकरी में बिताए उस नौकरी को छोडकर भारत लौटे. यहाँ चोवीस एकड बिना पानी की खेती खरीदी. प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर सरल, सहज भाषा में कृषकों को यह समझाने में व्यस्त हो गए कि भारत की दरिद्रता का कारण यहां की सिंचन रहित कृषि पद्धति में है और ऊपर से सरकार की अधिकृत नीति यही है कि यह कृषि, कृषक के लिए किफायती न हो. बाद में तो संघर्ष वाहिनी ने सीधे तौर पर 'शेतकरी संघटना' और उसके आंदोलन में शामिल होने का निर्णय लिया. वाहिनी में जो महानगरों में काम करते थे वे उसी तरह वहीं काम करते रहे. जिनकी ग्रामीण पृष्ठभूमि थी वे सभी 'शेतकरी आंदोलन' में उतरे. उन्होंने शेतकरी संगठन के वैचारिक गठन में कीमती योगदान दिया.

धुनी तरूणाई
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ १६०, कीमत १५० रु.
प्रकाशक :परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई -४३१५१७ (महा.)

अनुवादक
ज्योतिराव लढके
चेतस, २२, बाजीप्रभु नगर,
नागपुर -४४००३३

विशेष आलेख-१

कहानी रह जाएगी भगत पूर्ण सिंह की

- ओम थानवी

पंजाब की हरी-भरी धरती पर जो खून की लकीरें खिंची हैं और अंधकार फैला है उसमें शांति, करुणा और रोशनी की उम्मीद की तरह थे भगत पूर्ण सिंह. अनाथों और अपाहिजों की सेवा में पूरा जीवन लगा देनवाले भगतजी अब नहीं हैं, पर पिंगलवाडा के इस महात्मा ने इंसानी हमदर्दी की जो मिसाल छोडी है उसको याद करके आज के तहस-नहस होते पंजाब में एक भरोसा बंधता है. भगत पूर्ण सिंह के निधन पर उनके जीवन की मर्म छूनेवाली कहानी, दीन-दुखियों के बीच उनके काम और उनके बनाए पिंगलवाडा आश्रम के बारे में बता रहे हैं - ओम थानवी

बारह बरस से हरी धरती पर लाल लकीरें खींचते और कोई चालीस साल से विलास के मोहपाश में जकडे पंजाब में भगत पूर्ण सिंह एक उम्मीद को बांधे अलग खड़े नजर आते थे. उनकी उम्र पूरी हो गई. इनके साथ पंजाब में करुणा की एक दास्तान भी पूरी हो गई. भगत पूर्ण सिंह अमृतसर के मशहूर आश्रम पिंगलवाड़ा के संस्थापक थे. लाचार, बीमार, अपंग और अनाथ लोगों की सेवा करते-करते उन्हें जब महसूस हुआ कि बेसहारा लोगों का एक घर भी होना चाहिए तो उन्होंने पिंगलवाड़ा के निर्माण का संकल्प लिया.

वे कहते थे कि चार वर्षीय लावारिस बच्चे की दशा ने उन्हें इस बात के लिए ज्यादा कुरेदा कि सड़क की सेवा अधूरी सेवा ही होगी. वह बच्चा उन्हें १९३४ में लाहौर के डेहरा साहिब गुरुद्वारे के बाहर मिला था. तब भगत जी उन्नीस वर्ष के रहे होंगे. वह बच्चा बोल नहीं सकता था, और न ही वह लकवे के कारण चल-फिर ही सकता था. भगत जी ने उस बच्चे को गोद में उठा लिया और जीवन-भर वह 'बच्चा' उनकी साधना के रूप में उनके पास रहा. वह बच्चा और कोई नहीं, पिंगलवाड़ा में सबके प्रिय बुजुर्ग प्यारा सिंह हैं जो हरदम आपको एक कुर्सी पर किसी तपस्वी की तरह मौन बैठे दिखाई देंगे. भगत जी ८८ वर्ष के थे और प्यारा सिंह ६३ वर्ष के हैं. पर जीवन की आखिरी घड़ी तक भगत जी प्यारा सिंह को दैनिक निवृत्ति से लेकर कपड़े बदलने तक के काम खुद

अपने हाथ से करते थे. आज भगत जी के न रहने से पूरा पिंगलवाड़ा अपने को अनाथ-सा महसूस करता है. पर सबसे ज्यादा उदामी प्यारा सिंह जी के चेहरे पर पढ़ी जा सकती है.

भगत पूर्ण सिंह पंजाब के गांधी कहे जाते थे. कभी उनकी तुलना लोग मदर टेरेसा से करते. गांधीवादी तो भगत जी थे ही, करुणा की भी वे मूरत थे. लेकिन कोई उनके तकलीफोंभरे बचपन और बाकी जीवन पर नजर डालें तो लगेगा कि इन परिस्थितियों में एक समाज सेवक का बड़े होना अपने में विलक्षण घटना थी.

एक दफा मेरे आग्रह पर भगत जी ने अपने बचपन और जवानी की कुछ आपबीती बोलकर लिखवा भेजी थी. उनके जीवन का यह शायद सबसे प्रामाणिक दस्तावेज होगा. इसके मुताबिक, लुधियाना जिले के राजेवाल गांव में १९०४ में भगत जी का जन्म हुआ था. उनके पिता खत्री थे और माँ जट्ट परिवार की. असल में माँ की दूसरी शादी थी. पहला पति मुकलावे से पहले चल बसा था. दूसरी बार जिसने उसे अपनाया, वह पहले से विवाहित था और उसका एक बेटा भी था. जब जट्ट परिवार की विधवा उसके घर में आई तो किसी ने उसे सलाह दी कि इस विधवा से कोई बच्चा न हो, वरना खत्री और जट्ट स्त्री के बच्चों की शादी समाज में मुश्किल हो जाएगी. बहकावे में आकर भगत जी की माँ के तीन गर्भ गिरवा दिए गए. चौथा बच्चा गर्भ में आया तो माँ ने मिन्नते की. पति ने बात मान ली और भगत जी का जन्म हुआ.

भगत जी का बचपन न सिर्फ तकलीफ बल्कि अपमान के बीच बीता. अपमान इसलिए कि उनकी माँ व्याहिता पत्नी नहीं थीं. पर जब तक पिता जीवित थे, अपमान की घड़ियाँ शुरु नहीं हुई थीं. पिता साहूकारी करते थे. १९१४ के अकाल में उनका काराबार चौपट हो गया. माँ चाहती थीं कि बेटा दस जमात पढ़े. पिता जल्दी चल बसे और माँ चक्की पीसने की मजदूरी करने लगी. किसी ने कहा कि चक्की पीसकर बेटे को दस जमात पढ़ा न पाओगी.

इस बीच मिंटगुभरी की जेल में एक डॉक्टर के घर माँ को दस रुपये महीने का काम मिल गया. डॉक्टर बाद में लाहौर आ गया, साथ में भगत जी की माँ भी.

माँ लाहौर में बरसों बर्तन मांजने का काम करती थीं. भगत जी की पढ़ाई के लिए वह दस रुपये का मनीआर्डर भेजती थी. पर दसवी जमात में भगत जी फेल होने पर माँ ने उन्हें जो चिट्ठी भिजवाई, वह भगत जी को सदा याद रही. माँ ने लिखवा था 'उदास न होना, रोटी फेल भी खाते है.' भगत जी लिखते हैं 'वह किसान की बेटी थी. उसने देखा था कि किसान माँ-बाप सूरज चढ़ने से पहले खेतों में चले जाते हैं और हाथों से मेहनत करते हैं. अगर वहां (माँ) कुर्सी पर बैठनेवाले अफसर की बेटी होती तो मेरे फेल पर कहती कि हम बड़े बदकिस्मत हैं. अब तुम कुर्सी पर बैठकर कलम हाथ में लेकर काम नही कर सकोगे. बाद में माँ ने उन्हें लाहौर बुलवा लिया. वहां उन्होंने दसवीं में फिर दाखिला लिया और छात्रावास में रहे.

पढ़ाई में भगत जी का मन ज्यादा रमा नहीं. वे कुछ करना चाहते थे. उन्होंने समाज सेवा का व्रत लिया और बगैर तनख्वाह गुरुद्वारा डेहरा साहिब में काम करने लगे. बरसों वे लाहौर में बेसहारा लोगों का सहारा बने रहे और गुरुद्वारे में ही रहे.

भगत पूर्ण सिंह जी का असल धर्म तो इन्सानियत ही था. पर समाज में सिख और हिन्दू से एक साथ संस्कार पाने वाले वे मिसाल थे. वे सन् १९३२ में सिख बने. उनका बचपन का नाम राम जी दास था. रोज शाम को मैं शिवजी के मन्दिर में में माथा टेकने जाता था. गर्मी की छुट्टियों में मैं हर रोज शिवलिंग पर इक्कीस बेलपत्र चढ़ाता. पण्डित ऋद्धाराम से मैंने यज्ञोपवीत पहना था.

माँ की दीक्षा ऐसी थी कि वे मन्दिर जाते थे और गुरुद्वारे भी. गांव की उदासी धर्मशाला में गुरु ग्रन्थ साहिब का प्रकाश रोज़ होता तो माँ रोज़ मुझे वहां भेजती, जैसे मन्दिर भेजती थी. लेकिन भगत जी को गुरु ग्रन्थ साहिब का असल संदेश बाहर से मिला. 'मेरे हृदय पर किसी का प्रभाव पड़ा तो गांवों के रविदास संत ब्रह्मदास का. वह रागी था. उसके दोनों बेटे भी रागी थे. तीनों का जत्था था. एक बेटा जोड़ी बजाता, दूसरा बाजा. आप वह ताऊस बजाता था. वह सांस-सांस वाहिगुरू का सिमरन करता था. जब वह कीर्तन करता तो साथ-साथ उसकी व्याख्या भी करता था. (क्रमशः)

चिंतन भारती - १

नये युग की नई पुकार ?

- ॲड.डॉ.डी.एस.कोरे

स्वतंत्रता मिलने के बाद चुनाव की मतपेटियों में से जनता ने अपनी सरकार चुनी है. जब जनता की आशा आकांक्षा पूरी होती नहीं उनका असन्तोष उफान बनकर आता है. वंचितों की इच्छा पूरी नहीं हुई तो उनके लिए उनमें से कोई प्रयत्न करता है. आज जगभर राज्य शासन पद्धति में उलट पुलट होता रहता है. विविध जाति धर्म से सजे हुए. भारत देश में लोकतंत्र नाम की व्यवस्था काम कर रही है.

दुनियाभर में आंदोलन खतम हुए. शान्त हुए आज आवश्यकता ही नहीं रही ऐसा कंठशोष किया जाता है. ''है या नहीं है'' ये दो दल उछाल लेते हैं जिसके पास धन सम्पति. सत्ता है उसे अधिक चाहिए और जिसके पास कुछ भी नहीं है उनकी जीवन-मरण की कोशिश होती है. मनुष्य के स्वभावानुसार व्यक्ति का स्वार्थ छूटता नहीं. जो जो जगत में अपने सुख के लिए आवश्यक है वह अपने पास हो ऐसी जिद होती है. उसीसे सत्ता का लोभ तथा सम्पत्ति का लोभ दिखता है. नैसर्गिक मानवीय मूल्यों को हम पैरोंतले रौंदते हैं. न्यायमूर्ति अनंत माने ऐसे प्रसंग में कहते हैं कि ''मनुष्य जन्म को वैसे सर्व मान्य नियमों से समानता प्रदान की है परन्तु सांस्कृतिक, धार्मिक और राजकीय स्वार्थवश हम मानवीय अधिकारों का उल्लंघन करते हैं. सबको समान मानवी मूल्यों के अन्तर्गत कुछ मूलभूत अधिकार मिले हैं. वो अगर हम दे सके तो इस लोकतंत्र को कुछ महत्व मिलेगा.

डॉ.बाबा साहेब आंबेडकर जैसे दूर दृष्टा महामानवों ने इस देश की करोडों वंचित, स्त्रियों, दलित तथा दब्बू वर्ग को आवाज़ दी एक दिशा दी. उत्थान का मौका दिया. हमें स्वयं प्रयत्न किए बिना संविधान द्वारा दिए अधिकार मिलेंगे नहीं. आज की राजकीय जरूरतों से अधिकार मिलेंगे नहीं. आज की राजकीय जरूरतों से वंचित, दलितों की, स्त्रियों की दिशाभूल करनेवाले असंख्य घटक हैं. परन्तु एक दो या कुछ अनुभवों से जनता होशियार होती है. हर बार जनता को गृहीत नहीं कर सकते. अराजक व्यवस्था लाने के लिए दिशाहीन रूप से काम करनेवाले कुछ घटक आज जनबूझकर कुछ हितसंबंधियों के इशारों पर

काम कर रहे है. उनके सामने कौनसी नीतियां हैं. कल्याण की कल्पना क्या है. उनका आजतक के कार्य का इतिहास क्या है. उनके कार्य से किस समुदाय को विशेष अधिकार मिले हैं. जिससे उन्हें सुख से जीने का अवसर मिला है. आदिवासी, दलित, स्त्रियाँ, झोपड पट्टी की महिलाएँ, नगर बस्ती में गरीब तबके के अधिकारों के लिए तथा उनके जीने के सब आवश्यक कार्य कौन कौन से किए हैं. यह प्रश्न हमें देखने पडेंगे.

नैतिकता की संकल्पना बदल रही है. आज के समाजकारण में, राजकारणी कार्यकर्त्ता निःस्वार्थी निरलस, निःसंग और अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताएँ कम से कम रखकर कार्य करनेवाला हो. यह आज के कार्यकर्ताओं की व्याख्या है क्या? आज का कार्यकर्ता अधिक श्रीमंत अथवा अधिक बेकारों को मुफ्त में पालता है उसको उसके प्रस्थापित राजकीय पक्ष में मान होता है. उसका उठना बैठना होता है. वंचितों के सुख दुःख के लिए प्रयत्नशील कार्यकर्ता के पास ऐसी क्वालिफिकेशन होती है क्या ? न तो उसके पास धनि, दौलत, साधन न माध्यम. वह सदा सदा दुर्लक्षित, आलोचना के धनी होनेवाला और प्रवाह के विरूद्ध कार्य करनेवाला होने से अप्रिय कानून विरूद्ध उसकी भूमि का होने की वजह से उसे नाउम्मीद करनेवाले घटक उनके रिश्तेदार सगेसंबंधी, परिचित औरआजूबाजूवाले रहते हैं. ऐसे समय में अपनी जिम्मेवारी अधिक होती है. ऐसे कार्यकर्ता को, विचार करनेवाले को, नेता को जैसी उम्मीद हो वैसी मदद करें. प्रत्येक युद्ध में तीन प्रकार रसद के संसाधन और उनका नैतिक बल बढ़ानेवाले घटक. इसी तरह से अपने योग्य कार्यकर्ता को मदद का हाथ जाना चाहिए. इस दुनिया में एक व्यक्ति के दिमाग से बडी क्रान्ति नहीं हुई है. अपितु सामूहिक बुद्धि से क्रान्ति जरुर हुई है. पिछले पीढ़ी के दिमाग ने जो प्रयत्न किया उसके आगे का कदम आगे की पीढ़ी के दिमाग ने पिछली गलतियों से सीख कर किया. उससे सुधार करके विकास किया है. अर्थात शिक्षण यह लर्निंग न होकर अनलन होता है. जो जो बातें इस पहले नेताओंने, कार्यकर्ता ने गल्तियां की थीं उन्हें सुधार कर तथा यथा संभव पुनरावृत्ति न कर के अधिक सहजता से कार्य करना अर्थात उस समय का विकसित बुद्धि विकास मनुष्य विवेक से अधिक स्वाभाविक ढंग से जीना.

- क्रमशः

काव्य भारती

रक्त-पुष्प पर मंडराते

प्रज्ञा दया पवार
अनु : प्रकाश भातम्ब्रेकर

मुझे नहीं जीना है अपना वर्तमान
और अपना अतीत भी

बुढ़ियाये अतीत ने काफ़ी छला मुझे
और भींच लिया कसकर
मैं सिटपिटायी, छटपटायी
अकुलाकर चकरा गयी
उसके विदीर्ण आलिंगन को झिंझोड़ते हुए...

ना-दुरुस्त जनरेटर को घिर्री पर बिठाये
वह पुरज़ोर खींच रहा है मुझे
पीछे की ओर
पीछे, और पीछे
छुआउ रहा है विच्छिन्नता का मुलायम पफ
मेरे चेहरे से बारम्बार
और खोज रहा है बेसब्री से
तलछट में बची
तनिक-वनिक बुकनी
अद्भुतोपम टाल्कम पाउडर की
उसे साल रहे हैं
मेंरे सहस्रखंड
छितरे-बिखरे प्रतिबिम्ब;

उसे मलाल हो रहा है
मेरे भीतर से
खिसकी, रिसती
स्खलनशील मग्नता का

रक्त-पुष्प पर मँडराती
पीली तितली के
मेरे पुनर्नवा सपनों का पोशीदा है
यह बुढ़िया या अतीत
जो मुझे भींच लेता है कसकर...

अनु. : १२, न्यूरोज विला,
गोरेवाड़ी,पं.सातवलेकर मार्ग,
माहिम, मुम्बई-४०००१६,
मो.०९३२४४०९४९०

हिन्दी पखवाडा समारोह समिति
केरल हिन्दी प्रचार सभा

केरल राज्य स्तरीय हिन्दी पखवाडा समारोह

१६.०९.१४	स्टेट बँक त्रावणकोर द्वारा प्रायोजित उद्घाटन समारोह
१७.०९.१४	दृश्य-श्रव्य प्रचार कार्यालय प्रायोजित राजभाषा प्रदर्शनी
१८.०९.१४	कार्पोरेशन बँक तिरुवनन्तपुरम् प्रायोजित केन्द्रसरकार/ राष्ट्रीयकृत बँक के कर्मचारियों के लिए प्रतियोगिताएं
२०.०९.१४	हिन्दुस्तान पेट्रोलियम, कोच्चि प्रायोजित छात्रों के लिए प्रतियोगिताएं
२२.०९.१४	बड बोर्ड तिरुवनन्तपुरम प्रायोजित भारतीय भाषा कवि-सम्मेलन
२३.०९.१४	एल.पी.एस.सी., आई.आई.एस.टी.वलियमला विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केन्द्र, तुम्बा, प्रायोजित राजभाषा कार्यशाला
२४.०९.१४	हिन्दी विभाग युनिवर्सिटी कालेज तिरुवनन्तपुरम प्रायोजित संगोष्ठी-१, इक्कीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य
२५.०९.१४	हिन्दी विभाग, केरल विश्व विद्यालय, प्रायोजित भारतीय साहित्य सम्मेलन
२६.०९.१४	हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केन्द्र, तिरुवनन्तपुरम प्रायोजित संगोष्ठी-२, समकालीन महिला लेखन : विविध आयाम
२७.०९.१४	एच.एल.एल.लाईफ केयर, पूजप्पुरा, तिरुवनन्तपुरम् - प्रायोजित समापन सम्मेलन.

वन्यजीवन और सामाजिक संघर्षों का अंतर्संबंध

- जो लोटस-फारीन

वनों व जलस्रोतों में घटती जैवविविधता अब सामाजिक संघर्ष का कारण बनती जा रही है. मानव आबादी का बड़ा हिस्सा समुद्रों, नदियों अन्य जलस्रोतों व वनों पर न केवल अपनी आजीविका के लिए बल्कि पोषण के लिए भी निर्भर है. भारत की स्थिति भी इससे पृथक नहीं है. प्रस्तुत आलेख यूं तो दक्षिणपूर्व एशिया एवं अफ्रीका पर केन्द्रित है लेकिन हमारे यहां की परिस्थितियां भी इतनी ही बदतर हैं. आधुनिक विकास के पैरोकार प्रत्येक प्राकृतिक संपदा को उत्पाद में बदलकर उसका आर्थिक दोहन ही करना जानते हैं. वर्तमान और भविष्य दोनों पर आसन्न खतरों से चेताता महत्वपूर्ण आलेख. (का.सं.)

मछलियों का अत्यधिक दोहन, वन्यजीवन की तस्करी और विलुप्त होती प्रजातियां इन सबमें क्या साझा है? साइंस पत्रिका में हाल ही में छपे एक प्रपत्र के अनुसार सभी पर्यावरणीय चुनौतियों के सतत सामाजिक परिणाम निकलेंगे. जबरिया श्रम, संगठित अपराध और यहां तक कि समुद्री डकैती तक की बात करें तो आप इनके पीछे भी पर्यावरणीय परिस्थितियां खोज सकते हैं. यह प्रपत्र केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के बर्कले शोधार्थियों ने प्रकाशित कराया है जिसमें संसाधनों के क्षरण और इसके अनपेक्षित सामाजिक परिणामों में आपसी संबंध सामने आए हैं. बर्कले के शोधार्थी डाउग मॅकाले का कहना है, हमने इस दस्तावेज में विशेष रूप से उस प्रक्रिया को सामने लाने का प्रयास किया है, जिसके माध्यम से वन्यजीवन का नाश होता है और वह यांत्रिकता से जुड़ती है. जोखिम में पड़े प्रजातियों की हानि कैसे होती है और एक महत्वपूर्ण खाद्य संसाधन का नष्ट होना वास्तव में किस प्रकार अनपेक्षित ढंग से बाल श्रम एवं आंचलिक विवादों को बढ़ाता है.

उनका यह भी कहना है कि जाहिर सी बात है कि इस तरह की कुछ प्रजातियों का विलुप्त होना यहां पर निवास करने वाले को प्रभावित करता है लेकिन अन्य प्रजातियों का नाश ज्यादा हानिकारक है और इस सबसे ज्यादा गंभीर बात यह है कि इस वजह से हम हिंसा के लगातार बढ़ने और जबरिया श्रम जैसे बढ़ते सामाजिक अन्यायों से भी दो चार हो रहे हैं.

संसाधनों के नष्ट होने के परिणामस्वरूप बढ़ते सामाजिक संघर्षों का संभवत: सबसे ज्वलंत उदाहरण मछली उद्योग है. जैसे-जैसे विश्वभर में मछलियां कम होती जा रही हैं, मछुआरों को और अधिक दूर तक सफर करना पड़ता है और मछलियां पकड़ने में ज्यादा समय लगाना पड़ता है. इससे इनकी व्यापारिक लागत भी बढ़ जाती है. जैसे ही श्रम की मांग बढ़ती है वैसे ही मछली मारने वाली नौकाएं मानव तस्करी में जुट जाती हैं और बच्चों और पलायन कर आए मजदूरों को इसने मुफ्त में काम पर रख लिया जाता है. उदाहरण के लिए थाईलैंड में पलायन श्रमिकों को १८ से २० घंटों तक थकाकर चूर कर देने वाला शारीरिक श्रम करना पड़ता है. इसके अलावा उनका शारीरिक शोषण भी होता है तथा उन्हें खाने को बहुत कम दिया जाता है. इतना नहीं उन्हें ठीक से सोने भी नहीं दिया जाता.

लेखकों का मानना है कि इसी तरह मछली मारने के अधिकारों में बढ़ती प्रतियोगिता के समानांतर कमजोर राष्ट्रीय सरकार के चलते सोमालिया तट पर समुद्री डकैती में वृद्धि हुई है और इनसे प्रेरित होकर स्थानीय मछुआरे अब जाल के माध्यम से हथियारों का व्यापार करने लगे हैं. अध्यान के मुताबिक ठीक ऐसा ही सेनेगल, नाईजीरिया और बेनिन में भी दोहराया जा रहा है.

हालांकि सभी लोग इस बात से सहमत नहीं हैं कि संसाधनों की कमी मछली उद्योग के सामने मुख्य मुद्दा है. अमेरिका के जार्जटाऊन विश्वविद्यालय में विदेश सेवा के प्रोफेसर एवं अमेरिका के मानव तस्करों से निपटने वाले अभियान के राजदूत मार्क लेगोन का कहना है, समुद्री खाने (सी-फूड) की मांग में लगातार वृद्धि हो रही है, लेकिन सीफूड की उपलब्धता में आ रही कमी से भी बड़ा मुद्दा श्रम की कमी का है. उदाहरण के लिए थाईलैंड की स्थिति को लें वहां पर मौसमी मछुआरों की कमी हो गई है और उस आवश्यकता की पूर्ति हेतु उत्तरपूर्वी एशियाई देशों से मजदूरों को बुलाना पड़ रहा है.

संसाधन से संबंधित तनाव सिर्फ मछली उद्योग तक ही सीमित नहीं है, यह भीतरी या आंतरिक स्थानों तक फैल गए हैं. उदाहरण के लिए पश्चिमी अफ्रीका में मछलियों की संख्या में कमी आने से स्थानीय समुदाय अब प्रोटीन हेतु काफी हद तक स्थलीय या जमीन पर विचरण करने वाले जानवरों पर निर्भर हो गए हैं. ये स्थलीय प्रजातियां भी अब छितरा गई हैं (कम हो गई हैं). शिकार करना अधिक कठिन हो गया है तथा इसमें ज्यादा समय लगने लगा है. इसे पुन: इस संदर्भ में देखना होगा कि खाना प्राप्त करने में आ रही मुश्किलों को

कम करने के लिए शिकारी अब बाल श्रम पर अधिक निर्भर हो गए हैं. अफ्रीका में हो रही वन्यजीवन तस्करी के सामाजिक परिणाम भी सामने आ रहे हैं. उदाहरण के लिए हाथी दांत के अधिक मूल्य मिलने की वजह से संगठित अपराध वर्ग अब अवैध वन्यजीव व्यापार की ओर आकर्षित हुआ है और इसके स्थानीय समुदायों पर भयंकर प्रभाव पड़ रहे हैं.

प्रो. जस्टिन ब्राषेयर का कहना है कि, यह दस्तावेज बताता है कि वन्यजीवन में गिरावट सामाजिक संघर्ष का महज लक्षण नहीं बल्कि उसका स्रोत है. अरबों लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर अपनी आय एवं पोषण हेतु यहां से प्राप्त मांस एवं हेतु वनों पर निर्भर हैं और यह स्रोत लगातार घटते जा रहे हैं. मानव आजीविका के इतने महत्वपूर्ण पक्ष में आई गिरावट के व्यापक सामाजिक परिणाम भुगतना कतई आश्चर्यजनक नहीं है. इस दस्तावेज में इस तरह के अनेक उदाहरण दक्षिण पूर्व एशिया एवं अफ्रीका से उद्धृत किए गए हैं. परंतु वन्यजीवन ह्रास के सामाजिक प्रभाव तो पूरे विश्व में दिखाई पड़ रहे हैं. मॅकाले ने कनाडा के पूर्वी समुद्री तट पर कॉड समुदाय के वहां से पूरी तरह से चले जाने और उसके परिणामस्वरूप स्थानीय मछली उद्योग की बर्बादी के मद्देनजर कहा है कि कुछ देश संसाधनों के कम होने से उपजी परिस्थितियों का ठीक से मुकाबला कर पाए हैं. परंतु उनका कहना है गंभीर संकट में पड़े पूरे समुदाय को उबारना या वन्यजीवन में आ रही गिरावट से उत्पन्न व्यापक मानवीय त्रासदी से निपट पाना कनाडा, अमेरिका या यूरोप के किसी देश के लिए संभव हो सकता है. लेकिन उप सहारा अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया के अधिकांश देशों के पास इतना धन नहीं है वे इतने बड़े पैमाने पर बेलआऊट दे सकें. ऐसी स्थिति में वहां पर इसके प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप में दिखेंगे. उन्हें और भी अधिक चोट पहुंचेगी.

शोधार्थियों के अनुसार हमें और अधिक समावेशी नीति बनाने की आवश्यकता है. पर्यावरणीय एवं सामाजिक चुनौतियों से निपटने के लिए सभी संबंधित पक्षों को मिलजुल कर कार्य करना होगा. नीति निर्माताओं को भी अपनी दृष्टि को सिर्फ कानूनों को लागू करने तक सीमित नहीं रखना चाहिए. अवैध शिकार संबंधी कानूनों या श्रम कानूनों को लागू करने के साथ ही साथ सरकारों को इन समस्याओं की जड़, जिसमें वन्यजीव संख्या में आ रही कमी भी शामिल है, से भी निपटना चाहिए.

(सप्रेस)

विशेष आलेख - २

पंजाब को लीलती नशाखोरी

- भारत डोगरा

पंजाब में बढ़ती नशाखोरी दांवानल की तरह फैल रही है. इसके परिणामस्वरूप दहेज और कन्या भ्रूणहत्या की समस्या पुनः सिर उठाने लगी हैं. राजनीति का बढ़ता अपराधीकरण इन स्थितियों के लिए जिम्मेदार हैं. इन परिस्थितियों के निपटने के लिए सामाजिक जागरूकता की आवश्यकता है. इन समस्याओं की अन्य राज्यों में भी फैलने की आशंका व्यक्त की जा रही है. (कासं.)

पंजाब को देश के सबसे समृद्ध राज्यों में गिना जाता है. खेती का खर्च बहुत बढ़ जाने के कारण व अनुचित तकनीकों के प्रसार के कारण छोटे किसानों के कर्ज व आर्थिक तनाव बहुत बढ़ गए हैं. इन बढ़ते आर्थिक तनावों के बीच कुछ सामाजिक समस्याएं भी इतनी तेजी से बढ़ी हैं कि अनेक परिवारों के लिए स्थिति असहनीय हो गई है. इनमें तरह-तरह के नशे का प्रसार सबसे गंभीर समस्या है.

अमृतसर में गुरु नानक देव विश्वविद्यालय के एक अध्ययन से सामने आया है कि पंजाब के ७० प्रतिशत युवक शराब या नशीली दवाओं का सेवन करते हैं. इस आंकड़े पर थोड़ी-बहुत बहस हो सकती है. भिन्न-भिन्न स्थानों की स्थिति कुछ अलग हो सकती है, पर इसमें कोई संदेह नहीं कि हाल के समय में तरह-तरह के नशे की समस्या तेजी से बढ़ी है, फिर चाहे वह शराब का नशा हो या विभिन्न तरह की नशीली दवाओं का. प्रति व्यक्ति शराब की खपत पंजाब में सबसे अधिक बताई जाती है. वर्ष २००९-१० में पंजाब में २९ करोड़ बोतल शराब की खपत हुई. अवैध शराब व बाहर से मंगाई गई शराब इससे अलग है. समय-समय पर ऐसे आरोप लगते रहे हैं कि राजनीतिक दृष्टि से प्रभावशाली व्यक्ति व अधिकारी भी नशे के विभिन्न कारोबारों से बहुत आर्थिक लाभ प्राप्त करते रहे हैं. शराब के व्यापार में यह खुलेआम होता है तो नशीली दवाओं के अवैध कारोबार में यह चोरी-छिपे होता है. यह राजनीति के अपराधीकरण का केवल एक पक्ष है. राजनीति के अपराधीकरण होने से अपराधियों के हौसले बहुत बढ़ गए हैं. राजनीति से जुड़े प्रभावशाली व्यक्ति कई स्तरों पर हिंसा व अपराधों को बढ़ावा देते हैं या ऐसे हिंसक तत्त्वों को अपना समर्थन देते हैं जिनकी गतिविधियों से समाज बहुत असुरक्षित हो गया है.

समाज व राजनीति का बढ़ता अपराधीकरण पंजाब में इस कारण और खतरनाक हो जाता है. यह राज्य कुछ वर्षों पूर्व आतंकवाद के ऐसे खतरनाक दौर से गुजर

चुका है जिसे सीमा पार से भी बहुत समर्थन प्राप्त था. ऐसी स्थिति में समाज और राजनीति के बढ़ते अपराधीकरण को समय रहते नियंत्रित करना और भी जरूरी हो गया है.

नशे के तेज प्रसार के साथ महिलाओं के विरुद्ध कई तरह की हिंसा और यौन अपराध भी बढ़े हैं. इसके अतिरिक्त नशे पर अधिक खर्च के कारण अनेक महिलाओं को परिवार के लिए जरूरी खर्च उपलब्ध नहीं हो रहा है. बच्चों को प्राथमिकता देते हुए महिलाएं अपने पोषण व स्वास्थ्य के खर्च में पहले कटौती करती हैं.

परंपरागत तौर पर पंजाबी समाज में बेटी के जन्म को अच्छा नहीं समझा जाता था. कुछ स्थानों पर कन्या शिशु की हत्या भी की जाती थी. धीरे-धीरे इस स्थिति में सुधार आया था, परंतु नई तकनीकों ने समस्या को और बिगाड़ दिया व यहां कन्या भ्रूण हत्या बड़े पैमाने पर होने लगी. इस पर कानूनी प्रतिबंध लगने से कुछ राहत मिली, पर कानून का उल्लंघन आज भी होता है. पंजाब में लिंग अनुपात वर्ष २०११ की जनगणना में भी बहुत प्रतिकूल पाया गया (८९३). हालांकि २००१ के बाद स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ. नवांशहर जैसे स्थानों पर कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध चले अभियान का अच्छा असर देखा गया.

दहेज की समस्या भी यहां पर परंपरागत तौर पर भी मौजूद थी. उपभोक्तावाद के प्रसार के दौर में दहेज समस्या पहले से कहीं विकट हो गई है. निर्धन परिवार को भी यदि दहेज व विवाह के अन्य खर्च पर तीन-चार लाख रुपए खर्च करने पड़े तो यह निर्धन परिवारों के कर्ज का एक बड़ा कारण बन जाता है. इस कारण बेटी के जन्म के विरुद्ध जो परंपरागत मान्यता थी वह और भी दृढ़ होती जाती है. रंजना पाधी के हाल के अध्ययन में जिन कर्जग्रस्त परिवारों से बातचीत की गई, उनमें से लगभग आधे परिवारों ने ऋण से प्राप्त धन को विवाह पर खर्च किया. इनमें औसत कर्ज २ लाख से कुछ अधिक ही रहा. गांवों में किसानों व खेत-मजदूरों दोनों में दहेज व विवाह के लिए कर्ज लेने की मजबूरी देखी गई.

अधिक दहेज देने के बावजूद विवाह के बाद दहेज के लिए सताया जाना भी पंजाब की एक बड़ी समस्या है. वर्ष २०१३ में महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की दर्ज शिकायतों के तिमाही आकलन से पता चला कि पुलिस हेल्पलाइन की नई सेवा के अंतर्गत तीन महीनों में दहेज प्रताड़ना के २०५ मामले दर्ज हुए जबकि अन्य घरेलू हिंसा के ६२४ मामले दर्ज हुए. इसी दौरान बलात्कार के ७६ मामले दर्ज हुए. इन तीन महीनों में हेल्पलाइन में पंजाब में महिलाओं के

विरुद्ध अपराध के ३३३९ मामले दर्ज हुए.

आत्महत्याओं की बढ़ती प्रवृत्ति के कारण अनेक परिवारों की जिम्मेदारी महिलाओं पर आ गई है जबकि बहुत कम आय के साथ कर्ज का बोझ पहले से था. इन महिलाओं के लिए कठिनाइयां संभवत: सबसे अधिक हैं जबकि उन तक बहुत कम सहायता पहुंची है. तेज मशीनीकरण के दौर में महिला खेत मजदूरों के लिए खेती से रोजगार के अवसर पहले से और कम हो गए हैं.

अनेक गांवों में पेयजल बुरी तरह प्रदूषित हो गया है और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियां तेजी से फैल रही हैं. इस तरह अनेक तरह की विकट समस्याओं को एक साथ संभालने में अनेक महिलाओं की समस्याएं असहनीय हद तक बढ़ गई हैं.

पंजाब के महिला संगठनों व यहां के समाज-सुधार आंदोलनों के सामने बहुपक्षीय चुनौतियां हैं. सामाजिक बदलाव को ऐसी सार्थक दिशा देना जरूरी है जिसने महिलाओं और लड़कियों से होने वाला भेदभाव अन्याय और विभिन्न तरह की हिंसा दूर हो. ऐसी हिंसा के विरुद्ध समाज में व्यापक मान्यता बने और इसे रोकने के लिए गांव व मोहल्ले स्तर पर समाज सक्रिय हो. इसके साथ नशे जैसी अन्य समस्याओं के विरुद्ध महत्त्वपूर्ण कदम उठाना जरूरी है जिनके कारण महिलाओं की समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं.

अनेक क्षेत्रों में पनप रहे नए सामाजिक तनावों जैसे दलित व गैर-दलित तबकों में बढ़ते अलगाव को भी समय रहते सुलझाना जरूरी है, और यह समाधान न्याय आधारित होना चाहिए. दलित समुदाय में ही भूमिहीन मजदूर सबसे अधिक हैं जो ग्रामीण समाज का सबसे वंचित तबका रहे हैं. नई तकनीक आने के बाद उनके रोजगार के अवसर और कम हुए हैं जबकि उन्हें व प्रवासी मजदूरों दोनों को नई तकनीकों व विशेषकर कीटनाशक दवाओं व मशीनरी से जुड़े खतरों को अधिक सहना पड़ा है. ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक विकास कार्यों में सबसे मेहनतकश दलित समुदाय की बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है. अत: अलगाव को दूर कर विभिन्न समुदायों के सहयोग के अवसर न्याय व समता आधारित समाधानों से प्राप्त करने चाहिए.

इस तरह आपसी सहयोग व एकता का माहौल बनेगा तो हर तरह की सांप्रदायिकता और भेदभाव को दूर रखना संभव होगा. इस तरह के आपसी एकता के माहौल में ही नशे जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध ग्रामीण समाज मिलकर आपसी एकता व मजबूती से जरूरी कदम उठा सकेंगे.

(सप्रेस)

विशेष आलेख - ३

मातृत्व : एक रुका हुआ फैसला

- चिन्मय मिश्र

हर स्त्री के
गर्भ में रहते हैं,
उसके आने वाले क्लेश

- रघुवीर सहाय

फेसबुक और एप्पल जैसे सूचना तकनीक आधारित व्यावसायिक संस्थान अपने यहां कार्यरत महिलाओं को मातृत्व सुख टालने के लिए उन्हें एग्स फ्रीजिंग यानि अंडाणुओं को जमाकर (कम तापमान) रखने के लिए २० हजार डॉलर (१२ लाख रु.) तक का भुगतान करने को तत्पर हो गए हैं. इतना ही नहीं वे इसे बैंक में रखने पर होने वाले व्यय हेतु ५०० डॉलर (३० हजार रु.) तक का वार्षिक भुगतान भी करेंगे. कंपनियों की सोच है कि उनके यहां कार्यरत कुशल महिला तकनीशियनों की सेवाओं का उन्हें लगातार अबाधित लाभ मिलता रहे. दूसरी ओर उनकी ओर से यह दलील दी जा रही है कि वे यह सब इसलिए कर रही हैं, जिससे कि महिला कर्मचारी अपने काम पर पूरी तरह केंद्रित हो सकें और गर्भधारण की प्रक्रिया को कुछ साल आगे खिसका सकें. इस तरह महिलाओं के जीवनचक्र को बदला जा रहा है. फेसबुक में यह योजना लागू हो गई है और एप्पल इसे अगले वर्ष तक क्रियान्वित कर देगा.

आधुनिक विज्ञान और इसका व्यावसायिक उपयोग करने वाले (अपवादों को छोड़कर) लैंगिक समानता को लेकर चाहे जितनी दलीलें दें लेकिन वे अंतत: पितृसत्तात्मक परंपरा को दिनों दिन मजबूत करने की प्राणप्रण से कोशिश कर रहे हैं और उसमें लगातार सफलता भी प्राप्त कर रहे हैं. कन्या भ्रूणहत्या, सरोगेसी (किराए पर कोख), व कई मामलों में कृत्रिम गर्भाधान प्रक्रिया को मूर्त रूप देने के बाद अब एग फ्रीजिंग को व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करना उनकी इसी नीयत को पुष्ट करता है.

एक ओर सारी दुनिया में मातृत्व अवकाश को ६ से बढ़ाकर ९ महीने करने की चर्चा है. वहीं कार्यालय में बेबी सिटिंग या झूलाघर की व्यवस्था मजबूत करने

की बात हो रही है और बच्चे को दूध पिलाने के लिए मां को कार्य के बीच में एक घंटे का अवकाश दिए जाने की वकालत की जा रही है. वहीं अब कंपनियों ने इन सब झंझटों से मुक्ति पाने के लिए महिलाओं को प्राकृतिक रूप से मां बनने देने से रोकने के लिए कमर कस ली है. यह एक सर्वविदित तथ्य है कि सामान्यतया २७ वर्ष की आयु तक ही किसी महिला का अंडाणु पूर्ण स्वस्थ होता है और इसके बाद उसकी गुणवत्ता में गिरावट आने लगती है. मगर भारत सहित दुनिया के अधिकांश देशों में कैरियर के नाम पर मातृत्व की उम्र बढ़ती जा रही है, जिसके परिणाम हम प्रसूति संबंधी जटिलताओं के रूप में भारत में बड़े पैमाने पर देख रहे हैं.

तथाकथित पश्चिमी खुला समाज भी महिलाओं को लेकर अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त नहीं है. फेसबुक जैसे संगठनों में महिलाओं का उपहास उड़ाने के लिए फ्रेट हाऊस कल्चर (प्रजनन संबंधी संस्कृति) और बॉयज क्लब (लड़कों के क्लब) सक्रिय हैं. दूसरी ओर देखें तो अमेरिका में ४० से ४४ वर्ष की आयु में मां बनने वाली महिलाओं की संख्या पिछले १० वर्षों में दो गुनी हो गई है. इस नई घोषणा पर चर्चा करते हुए एक वरिष्ठ आईटी विशेषज्ञ श्रीमती सुष्मिता का कहना है कि यह भ्रामक है कि सूचना तकनीक (आईटी) में काम करने वाली महिलाएं मातृत्व की जिम्मेदारी उठाने से डरती हैं. उनका कहना है कि अमेरिका में भी लड़कियां जल्दी से जल्दी मां बनना चाहती हैं, जिससे कि वे अपनी ऊर्जा का भरपूर इस्तेमाल बच्चों का विकास करने में लगा सकें. वे बच्चों की पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान देना चाहती हैं क्योंकि अब अमेरिका में उच्च शिक्षा में प्रवेश लेना दिनोंदिन कठिन होता जा रहा है. भारत में भी महिलाएं सुबह ८ बजे काम पर आने से पहले अपने बच्चों की तीमारदारी करके ही काम पर आती हैं. भारत में आई टी में काम कर रही महिलाएं सिर्फ बच्चों के लिए ही नहीं बल्कि अपने पालकों की देखरेख के लिए छुट्टी लेने तक में संकोच नहीं करतीं. वैसे दुनियाभर की महिलाएं इन मामलों में कमोवेश एक सी हैं. उनका यह भी कहना है कि अपवाद सभी जगह होते हैं और यह भी उन गिनीचुनी महिला प्रोफेशनल को ध्यान में रखकर तैयार की गई योजना है. याहू की मुख्य कार्यकारी अधिकारी का बच्चे को जन्म देने के बाद १५ दिनों में काम पर आ जाना भी इसी अपवाद की श्रेणी में आता है. क्रमशः

राष्ट्रीय युवा योजना नई दिल्ली आयोजित

राष्ट्रीय एकात्मता एवं शांति युवाशिविर

1. THALASSARI, DIST. KANNUR (KERALA),
RLY. Stn.THALSSERY.
20-26 Nov. 2014
Contact : Shri Karayil Sukumaran Mob. 09447482816
e-mail : karayilsukumaran@yahoo.com

2. उडीसा
जन. 2015
संपर्क : श्री मधुसूदन दास मो. 08895799190

3. अहमदनगर (महा.).
5-10 फरवर 2015
संपर्क : श्री गोरख वेताल मो. 09822458744

4. कोकराझार (आसाम)
फरवरी 2015

5. जम्मू (कश्मीर)
मार्च 2015

6. नई दिल्ली
अप्रैल / मई 2015

के.सुकुमारन
विश्वस्त, रा.यु.यो.

पंढरपुर सत्याग्रह एवं एदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह

१० मई २०१५

इसबार आसाम में विशेष आयोजन

आयोजक

श्री हरीश भट्ट

कोकिला विकास आश्रम

ग्रा.पो.सोनपुर वाया-गोहपुर -784168,
जि. सोनपुर (आसाम)
harishbhatt132@gmail.com
mo. 09435563879 / 09435183391

अभी से इसे नोट कर समय पर रेल आरक्षण कर लें देश के किसी भी कोने से सिलीगुडी पहुंचें. एक दिन में दार्जीलिंग देखें और सिलीगुडी से गोहपुर के लिए रेल है. गोहपुर से आयोजक आपको ले जाएंगे.

इसी निमित्त उत्तर पूर्वी भारत देखना हो तो 7 दिन अतिरिक्त देकर प्रवास, निवास, भोजन खर्च के लिए रु. 7000 लगेंगे, गोहपुर तक का तथा वापसी का रेल खर्च स्वयं करना होगा. केवल 25 लोगों की व्यवस्था हो सकेगी उ.पू.भारत दर्शन के लिए. अतः रू. 7000 भेजकर आरक्षण करवाएं जनवरी 15 तक.

: यात्रा संयोजक :

हर्षद भाई रावल 08141973341

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आन्तर भारती अन्तर्राष्ट्रीय

बाल आनंद महोत्सव

लेहरगग्गा (पंजाब) में

8 **से** 12 **वर्ष के बच्चों के लिए अनुपम अवसर**

20 नवंबर से 24 नवंबर 2014 तक

(19 को पहुंचे 24 को शाम से लौटें)

विशेष आयोजन : 1. मार्गरक्षी शिक्षकों की कार्यशाला
4. पूर्व बाल महोत्सव आयोजकों का सत्कार

संपर्क

डा.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक राष्ट्रीय युवा योजना
09810350404
01123222329
221, दी.द.उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली 110002
nypindia@gmail.com

कँवलजीत ढिंढसा
मो.09417025498
सेएबा स्कूल
लेहरगग्गा - 148031
जि.संगरुर (पंजाब)
kawalseaba@yahoo.com

नोट : लेहरगग्गा, लुधियाना-जाखल रेल्वे मार्ग पर है दिल्ली से भी रेल उपलब्ध हैं,
जाखल स्टेशन से स्कूल बसें भी ले जाएंगी.